गृह-सजावट के सिद्धांत
(Principles of Decoration)

घर की सजावट से तात्पर्य है, कि प्रत्येक वस्तुओं के सौन्दर्य एवं आकर्षण पक्ष का संबंध "कला" से हो। यह हमारी रुचि अथवा अभिव्यक्ति पर निर्भर करता है। घर की सजावट सिर्फ कीमती कीमती से कीमती वस्तुओं को इकट्ठा करने से ही नहीं है।

वास्तव में घर की सजावट तो एक रचनात्मक कला है, जो एक साधारण से साधारण दिखने वाले घर को भी कायाकल्प बदल देता है। इसके कुछ नियम सिद्धांत भी होते हैं, जिसका पालन कर हम सजावट में उपयोग प्रयुक्त होने वाले साधनों में आकार रंग ~~एक~~ एवं प्रकाश इत्यादि का विशेष कर ध्यान रखना पड़ता है। जैसे कला के मौलिक सिद्धांतों का पालन करते हुए घर में विभिन्न वस्तुओं की रुचिपूर्ण व्यवस्था को गृह-सज्जा कहते हैं।

सुन्दरराज ने गृह सजावट के बारे में कहा है कि :-

आंतरिक सज्जा एक सृजनात्मक कला है, जो कि एक साधारण घर की काया-पलट सकती है, यह घर में रहने वालों वालों की मूलभूत तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं एवं घर में उपलब्ध स्थान एवं उपकरणों के मध्य समायोजन करने की कला है। और इस प्रकार घर में सुखद वातावरण बनाने का प्रयास है। ~~अतः~~

अतः परिभाषा से ही स्पष्ट है, कि इसके माध्यम से घर का वातावरण अच्छा होता है, घर आकर्षक प्रतीत होने लगता है। और घर को देखकर

वंदना कुमारी

Scanned with CamScanner

घर में रहने वाले की अभिरुचि, कलात्मकता, दृष्टिकोण तथा सांस्कृतिक मूल्यों का बहुत ही अनुमान लगा सकते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि गृह सजावट अपने आप में एक व्यवस्थित कला एवं विज्ञान है। परंतु इसके भी कुछ मूलभूत सिद्धांत हैं जिसे हमें पालन करना पड़ता है। ये सिद्धांत हैं:→

1) समानुपात का सिद्धांत
2) लय का सिद्धांत
3) प्रबलता या क्रम का सिद्धांत
4) संतुलन का सिद्धांत एवं
5) अनुकूलन का सिद्धांत।

इन सभी सिद्धांतों का वर्णन इस प्रकार से हम करते हैं।

1) समानुपात का सिद्धांत:→ समानुपात सजावट के एक प्रमुख सिद्धांत है। यह डिजाइन बनाने का एक प्रमुख सिद्धांत है क्योंकि इसमें किसी भी वस्तुओं की लंबाई, चौड़ाई एवं ऊंचाई के तुलनात्मक संबंधों पर ध्यान रखा जाता है। जैसे - मकान के कमरों, व उनके खिड़कियों, दरवाजों की लंबाई, चौड़ाई एवं ऊंचाई समानुपात के नियमों के अनुसार रखने पर उनकी शोभा बढ़ा देती है। उदाहरण के लिए - फूलदान व फूलों में नियमित समानुपात रखने पर पुष्प सज्जा अधिक आकर्षक दिखलाई पड़ता है।

अतः समानुपात को ध्यान में रख कर ही घर की सजावट हम कर सकते हैं।

वंदना कुमारी

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

2) लय →

आकृतियों, भावों, रेखाओं तथा रंगों के संबंध को लय कहते है। इसमें गति रेखाओं एवं रंगों आकृतियों व रंगों का प्रयोग बार बार एक निश्चित क्रम में किया जाता है। बार्डर की बनावट में प्रत्येक स्थान पर लय का होना अति आवश्यक होता है।

3) सबलता या क्रम →

सबलता या क्रम का सिद्धांत गृह सज्जा में अति आवश्यक होता है। चित्र, मूर्ति, कशीदाकारी, दरी-कालीन एवं परदों में कुछ अंश प्रमुख होते है। जैसे - ये आकर्षण बिंदु होते हैं तथा सबल अंश कहलाते है। पर यह आकर्षक बिंदो दो से अधिक नहीं होना चाहिए।

4) संतुलन →

विभिन्न आकारों, डिजाइनों व रंगों के मध्य व्यवस्थित संबंध संतुलन कहलाता है। संतुलन दो प्रकार का होता है :-

(क) औपचारिक संतुलन
(ख) अनौपचारिक संतुलन

क) औपचारिक संतुलन :-

यह नियमित संतुलन होता है। इसमें प्रमुख केन्द्रबिंदु के दोनों ओर समान भार व समान आकृतियां की वस्तुओं को समान दूरी पर व्यवस्थित किया जाता है।

ख) अनौपचारिक संतुलन →

यह अनियमित संतुलन अधिक प्रभावशाली माना जाता है। इसमें किसी असमान भार वाली वस्तुओं

वंदना कुमारी

Scanned with CamScanner

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

को केन्द्र-बिंदु के दोनों ओर असमान दूरियों पर व्यव-स्थित किया जाता है।

5) अनुकूलन →

जब वस्तुओं में पर्याप्त आपसी समानता दिखाई देती है तो उसे अनुकूलन अथवा अनुरूपता कहते हैं। गृह-सज्जा में अनुकूलता के सिद्धांत के चार प्रमुख तत्व हैं। जो – आकार, बनावट रेखा व रंग है।

अतः गृह-सज्जा में अगर हम इन पाँचों सिद्धांतों पर ध्यान देते हैं तो घर-घर नहीं स्वर्ग हो जाता है। और हम कह सकते हैं कि –

"अपना घर है, स्वर्ग से भी सुन्दर"

डॉ. वंदना कुमारी
गृह विज्ञान (विभाग)
सर्वनारायण सिंह, रामकुमार सिंह कॉलेज
सहरसा

Lacture No. 4.
B.A Part. I
Paper- II

Topic- Principles of Decoration.

Scanned with CamScanner